ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्। सामवेद 203
हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।
O God ! Verily there is none like you. You are matchless.

वर्ष 37, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 सितम्बर, 2014 से रविवार 7 सितम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

केरल के बाद अब तमिलनाडु में भी पुनः गूंजेगा वैदिक नांद

मीनाक्षीपुरम् से फिर बढ़ेगा वैदिक धर्म प्रचार का कार्य

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का मीनाक्षीपुरम् दौरा

नए क्षेत्रों में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए साधनों की कमी न आने दी जाएगी – महाशय धर्मपाल

वर्ष 1980 का दशक जब दक्षिण भारत के हिन्दुओं को जबरन ईसाई एवं मुस्लिम मतों में मतान्तरण किया जा रहा था। उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी (लाला रामगोपाल शालवाले) ने तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् में हिन्दुओं को धर्मान्तरण से बचाने तथा उन्हें वैदिक धर्म में ही बनाए रखने के लिए आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम् को स्थापित करने का निर्णय लिया। कालान्तर में वर्ष 1983 में आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना हुई तथा तथा बच्चों को वैदिक संस्कारों से दीक्षित करने के लिए लघु विद्यालय की भी स्थापना हुई। परन्तु समय के साथ इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया और वहां आर्यसमाज के कार्य में शिथिलता आती चली गई और नाम मात्र की आर्यसमाज बनकर रह गई। आज भी वहां लघु विद्यालय ही चल रहा है किन्तु आर्यसमाज की दशा दयनीय है। कुछ समय पूर्व

ऐसे कार्यों से ही तमिलनाडु और केरल सहित द० भारत में आर्यसमाज का संगठन मजबूत होगा – आचार्य बलदेव

धर्मान्तरण की घटनाओं से प्रसिद्ध हुआ था मीनाक्षीपुरम्

जिन आर्यसमाजों में शिथिलता आई है उनकी भूमि पर कुछ न कुछ नया कार्य आरम्भ किया जाएगा – प्रकाश आर्य

मीनाक्षीपुरम् आर्यसमाज के परिसर में जीर्ण हो चुकी यज्ञशाला एवं आर्यसमाज में संचालित लघु विद्यालय के बच्चों के साथ सभा एवं आर्यसमाज के पदाधिकारीगण।

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. राधा कृष्ण वर्मा एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी वहां पहुंचे और विद्यालयों के बच्चों से भेंट की और जीर्ण हो चुकी यज्ञशाला में यज्ञ किया। इस अवसर पर उन्होंने तमिलनाडु के वरिष्ठ आर्यजनों जिन्होंने वर्ष 1981 में धर्मान्तरण के विरुद्ध

– शेष पृष्ट 5 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक : 26-27-28 सितम्बर, 2014

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें तथा अपनी सुविधा के लिए रेलवे आरक्षण आदि अभी से करा लेवें। 25 सितम्बर को रात्रि में ही पहुंच जाएं 26 की प्रातः गोष्ठी आरम्भ हो जाएगी। प्रान्तीय सभा के माध्यम से आने वाले नामों को ही भाग लेने की स्वीकृति दी जा सकेगी। कृपया अपने पहुंचने की सूचना सभा को पत्र अथवा ईमेल- *aryasabha@yahoo.com* द्वारा अवश्य दें ताकि तद्नुसार उचित व्यवस्था की जा सके।

आचार्य बलदेव (प्रधान, सार्व.सभा) **प्रकाश आर्य** (मन्त्री, सार्व.सभा) **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (कुलपति, गु. कां, विवि.)

संस्कृत रक्षण के लिए आरम्भ की गई एक महत्त्वपूर्ण पहल का एक वर्ष पूर्ण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का

प्रथम वार्षिकोत्सव, गुरु विरजानन्द दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

रविवार
21 सितम्बर, 2014

समय
सायं: 3 से 6:30 बजे

स्थान : आर्यसमाज आनन्द विहार
एल ब्लाक, हरि नगर नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

वेद-स्वाध्याय

सत्याचरण

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद : १/५

अर्थ—हे **(व्रतपते)** व्रतों के रक्षक **(अग्ने)** सर्वोन्नति साधक परमेश्वर! मैंने **(व्रतं चरिष्यामि)** व्रत करने का संकल्प किया है **(तत् शकेयम्)** उसको मैं भली-भाँति पूरा कर सकूँ **(तन्मे राध्यताम्)** मेरा वह व्रत सिद्ध होवे। **(इदम्)** यह **(अहम्)** मैं **(अनृतात्)** झूठ को छोड़ **(सत्यम्-उपैमि)** सत्य को प्राप्त होता हूँ।

सत्य की पहचान

जो वेद के अनुकूल, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध, सात्विक जनों की आत्मा जिसे करने की साक्षी दे, और जो विद्वज्जनों से अनुमोदित हो, उसे सत्य कहते हैं। **सत्यं यथार्थवाङ्मनसी** (योग०) जैसा मन में हो वैसा ही कहना, मानना और उसका आचरण करना सत्य कहलाता है।

व्रत—जिसका वरण किया जाता है अथवा जो दुर्गुणों का निवारण करे उसे व्रत कहते हैं। सत्य से बढ़ कर और कोई दूसरा व्रत या धर्म नहीं है। वेद सत्य की दो कसौटियाँ देता है—

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोतसत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धा ꣳसत्ये प्रजापतिः। यजुः० १९.७७

परमात्मा ने सत्य व्यवहार में श्रद्धा का भाव और असत्य में अश्रद्धा, भय, शंका, ग्लानि को दिया है।

सुविज्ञानं चिकितुष जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते। तयार्यत् सत्यं यतरदृजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत्॥ अथर्व० ८.४.१२

सत्य सदा सरल होता है। इसमें किसी प्रकार का कुटिल व्यवहार नहीं होता। परमेश्वर सत्याचरण करने वाले की ही रक्षा करता है। सत्यासत्य की परीक्षा पाँच प्रकार से होती है—

१. जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल वह-वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है।

२. जो सृष्टिक्रम के अनुकूल वह सत्य और जो सृष्टिक्रम के विरुद्ध हो वह असत्य है। जैसे बिना माता-पिता के संयोग के सन्तान का होना।

३. आप्त अर्थात् धार्मिक विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटी जन का उपदेश ग्राह्य और इसके विपरीत अग्राह्य है।

४. अपनी आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को सुख दूँगा तो वह प्रसन्न और दुःख देने पर अप्रसन्न होगा।

५. प्रत्यक्षादि आठों प्रमाण से जो परीक्षित है वह सत्य और शेष असत्य है। (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

सत्य सापेक्ष होता है और ऋत उन शाश्वत नियमों को कहते हैं जो सृष्टि का नियमन करते हैं।

सत्याचरण किसलिये—

१. शतपथ ब्राह्मण (१.१.१.४) में कहा है—**सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः तन्मनुष्येभ्यो देवानुपैति।** देव अर्थात् विद्वान् सदा सत्य ही बोलते, करते और मानते हैं। मनुष्यों का व्यवहार सामान्यतः सत्य और असत्य वाला होता है। यह सत्य व्यवहार मनुष्यों को देव श्रेणी को प्राप्त कराता है। देवों के इस व्रत का पालन करने वाले के यश की वृद्धि होती चली जाती है। प्रायः लोग कहते हैं कि झूठ बोले बिना सांसारिक व्यवहार नहीं चलता परन्तु उन्हें यह ज्ञात नहीं कि तुम्हारी झूठ को भोले लोग सत्य मान उस पर विश्वास कर लेते हैं। यदि उन्हें यह विदित हो जाये कि अमुक व्यक्ति असत्यवादी है तो फिर सारा खेल बिगड़ जायेगा।

२. **नास्ति सत्यात् परोधर्म नानृतात् पातकं परम्।** सत्य से बढ़ कर दूसरा और कोई धर्म नहीं और असत्य से समान दूसरा पाप नहीं। यदि सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञों को तराजू के एक पलड़े में रखें और सत्य को दूसरे में तो सत्य वाला पलड़ा ही भारी रहेगा। इसीलिये सत्य बोलने वाले को लोग 'यह धर्म की बात कह रहा है' ऐसा मानते हैं। धर्म की सत्य से ही रक्षा होती है। भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी सत्य में ही प्रतिष्ठित हैं। असत्य बोलने वाले की पूजा, जप, तप ऐसे ही है जैसे ऊषर भूमि में बीज बोना।

३. **साँच को आँच नहीं**—यह लोकोक्ति बतला रही है कि सत्य बोलने वाले को किसी प्रकार का भय नहीं रहता। वह एक सत्य बात को कहीं पर भी कहने में नहीं झिझकता। इसके विपरीत झूठ बोलने वाला भीतर से सदा भयभीत रहता है क्योंकि हृदय में स्थित परमात्मा उसे इस व्यवहार के लिये मना कर रहा होता है।

४. **सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः** (मुण्डको०) सत्य की जीत होती है असत्य की नहीं। सत्याचरण से देवयान का मार्ग प्रशस्त होता है। बादल सूर्य को कितना ही आच्छादित करलें अन्त में उनके निबिड़ तम को छिन्न-भिन्न कर सूर्य फिर चमकने लगता है।

परन्तु यहाँ एक बात अवश्य ही ध्यान देने योग्य है कि सत्य के लिये सत्याग्रह करना ही पड़ता है तभी सत्य का विजय होता है अन्यथा नहीं।

५. **सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा** (मुण्डको०) परमात्मा स्वयं सत्यस्वरूप है और सत्याचरण से ही उसकी प्राप्ति होती है।

असत्य बोलने से हानियाँ—

१.**असद् भूम्याः समभवत्तद्यामेति महद् व्यचः। तद्वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु॥** अथर्व० ४.१९.६

असत्, पाप, अधर्म एक बार बढ़ता है और फिर तपाता हुआ करने वाले के पास पहुँच जाता है। जब तक पाप का घड़ा नहीं भरता तभी तक असत्य अधर्म को करने वाला बढ़ता लगता है परन्तु अन्त में वह चारों खाने चित्त पड़ता है।

२. **समूलो वा एष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति** (प्रश्नो०) असत्य बोलने वाला मूल सहित वृक्ष के समान सूख जाता है।

३. **यः स्तेनयेद् वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः** सभी कार्यों की वाणी से सिद्धि होती है। जो वाणी को चुराता है अर्थात् असत्य बोलता है मानो उसने सभी पदार्थों की चोरी की है।

४. जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं। असत्यवादी का कोई भी विश्वास नहीं करता।

५. एक असत्य बात को छिपाने के लिये अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं जिस कारण व्यक्ति का स्वभाव ही असत्यवादी बन जाता है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्=प्रिय सत्य बोलना चाहिये। जिस सत्य से किसी का भला न हो और निरपराध की हिंसा हो जाये, उस सत्य को न बोलना ही अच्छा रहता है। जिसमें प्राणियों का हित होता हो वही सत्य बोलना चाहिये। इसी भाँति कटु सत्य और चाटुकारी से कही झूठी बातें भी त्यागने योग्य हैं। यही सनातन धर्म है।

- *क्रमशः*

सम्पादकीय

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार के परिपेक्ष्य में

आर्य समाज पूर्ण रुप से वैदिक संस्था है जो महर्षि के द्वारा 10 अप्रैल 1875 को स्थापित की गई। वर्तमान समय में विश्व के 34 देशों में आर्य समाज का सुचारु रुप से संचालन किया किया जा रहा है। अपितु भारत वर्ष का दक्षिण भाग जिसे आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक एवं केरल तथा महाराष्ट्र के कुछ भू-भाग को दक्षिण भारत के नाम से जाना जाता है। वहाँ पर आर्य समाज आज भी अपनी शून्य अवस्था में पड़ा हुआ है। क्यों?

यदि आर्य-समाज का प्रचार प्रसार बढ़ाना है तो कैसे?

मित्रों! विचारणीय बात है कि- आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल तथा महाराष्ट्र की क्षेत्रीय भाषाएँ क्रमशः तेलगु, तमिल, कन्नड, मलयालम तथा मराठी हैं। परन्तु आर्य समाज का अधिकांश साहित्य संस्कृत अथवा हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। भारत वर्ष में अधिकांशतः हिन्दी भाषा ही क्षेत्रीय भाषा है। आर्य समाज की जिन गुरुकुलीय संस्थाओं में वैदिक विद्वानों का निर्माण होता है वे सब हिन्दी भाषी क्षेत्रों में विद्यमान है। संस्था के प्रचारक, विद्वान एवं संन्यासी हिन्दी भाषी है और प्रचार साहित्य भी हिन्दी भाषा में ही प्रकाशित है-

अतः विद्वान एवं प्रचारक हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य किसी भाषीय क्षेत्र में समर्थ नहीं हुए तो अन्य भाषी साधारण जन किस प्रकार से हिन्दी को ग्रहण कर पाते। क्योंकि मानव व्यवहार का सशक्त माध्यम भाषा ही तो है। यही कारण रहा कि- तमिलनाडु के मीनाक्षी पुरम् जैसे स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना तो की गई लेकिन हिन्दी पोषित न होने से कोई उन्नति/विकास नही हुआ जबकि उस क्षेत्र में बढ़ रही मुस्लिम एवं ईसाईमत की संस्कृति का प्रमुख कारण है कि-उनकी सभी नीतियाँ नियम, साहित्य, शिक्षा एवं प्रचार सामगी उस क्षेत्रीय भाषा में विद्यमान है। किसी भी व्यवहार को ग्रहण अथवा प्रदान करने के लिए केवल एक ही माध्यम होता है, और वह है भाषा, उपयुक्त भाषा। यद्यपि महर्षि दयानन्द को उस क्षेत्र में जाने का समय नहीं मिला अपितु भाषा भी उसका एक कारण रहा।

सज्जनों! पशु और पक्षी भी अपनी ही भाषा को समझते है। इसलिए यदि किसी को कोई भेंट दी जाती है तो वह उसकी (लेने वाले की) देश, काल, परिस्थिति के आधार पर दी जाती है। अतः जब हमें 'वेदरुपी' सर्वोत्तम ज्ञान को देना है तो लेने वाले के अनुरुप होना चाहिए। जिसके निम्नलिखित साधन हो सकते है- (1) क्षेत्रीय भाषाओं में वैदिक साहित्य का प्रकाशन, उसी भाषा में प्रचार सामाग्री, तथा क्षेत्रीय भाषा के विद्वान ही सरलता पूर्वक वैदिकता के महत्त्व को प्रस्तुत करें। (2) क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित वैदिक सरलतम ज्ञान को 'पुस्तक-मेलों' के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है। (3) संस्कृत शिक्षण शिविर, यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, एवं बाल चरित्र निर्वाण शिविरों के माध्यम से वैदिक ज्ञान कोष का महत्त्व क्षेत्रीय भाषा एवं रीति के अनुरुप किया जाए।

उपरोक्त विधाओं के आधार पर ही कालीकट में आचार्य एम०आर० राजेश ने एक अद्भुत सफलता प्राप्त की। उन्होंने वैदिक साहित्य को मलयालम में प्रकाशित कराया, उसी भाषा में प्रचार सामग्री और यज्ञ पद्धति को उन्हीं की भाषा में प्रसारित किया और एक अद्भुत आयोजन की प्रस्तुती दी, जो एक प्रेरणास्रोत एवं ऐतिहासिक क्षण बन गया। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि का कुशल प्रबन्धन एवं संचालन का ही प्रतिफल है। इसी प्रकार का एक ओर प्रयास तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् में सार्वदेशिक सभा करने जा रही है। इस दिशा में सभा अनेक पुस्तक मेलों एवं यज्ञ आयोजनों के माध्यम से सफलता प्राप्त कर रही है। लगभग इन सभी क्षेत्रीय भाषाओं का वैदिक साहित्य भी सभा में उपलब्ध है यह सराहनीय कदम हैं जिसमें आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार अन्य भाषी क्षेत्रों में भी वृद्धि को प्राप्त हो रहा है।

- *विनय आर्य*

हास्य-व्यंग्य

समानधर्मा

- डॉ. पूर्ण सिंह डबास

सत्संग का संबंध भक्तजनों से होता है और भक्तजनों का जूतों से। जूतों के रथ पर सवार होकर भक्तगण मंदिर में पधारते हैं। अगर जूते न होते तो भक्तों के लिए मंदिर में जाना संभव नहीं हो पाता। इस प्रकार वह तत्त्व जो भक्तों का मंदिर से मेल कराता है जूता तत्व ही है। पता नहीं भक्ति-भावना के विकास पर खोज करने वाले विद्वानों का ध्यान जूतों के इस महत्त्व की तरफ क्यों नहीं गया।

केवल भक्तगण ही नहीं जूतों से प्रेरणा लेकर समाज के कई दूसरे तत्त्व भी नतमस्तक होकर मंदिरों में पहुँचते हैं। ऐसे ही एक भक्त को मैं कई बरस से जानता हूँ। वह अपनी लगन का इतना पक्का है कि सर्दी, गरमी या बरसात के मौसम की बड़ी से बड़ी प्रतिकूलता भी उसे सत्संगों में जाने से नहीं रोक पाती। सत्संगों में जाना उसकी दिनचर्या का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। सत्संग स्थलों के बीच काफी दूरी होने के बावजूद वह कई-कई सत्संग रोज अटैंड कर लेता है। एक दिन मैंने उससे पूछ ही लिया कि आप कौन-कौन से सत्संगों में जाते हैं। वह अपनी उदारता, विशाल हृदयता और जिसे राजनीतिक लोग सामाजिक संस्कृति कहते हैं, उसी संस्कृति का परिचय देते हुए बोला-मेरे लिए सभी देवी-देवता समान हैं। शिव मंदिर, दुर्गा मंदिर, राम मंदिर, हनुमान मंदिर, आर्य समाज मंदिर तथा साई बाबा के मंदिर से लेकर गुरुद्वारा, मस्जिद तथा चर्च तक में मेरे लिए कोई अंतर नहीं। राधास्वामी सत्संग हो या निरंकारी समागम, सभी मेरे ध्यान के केन्द्र रहते हैं। प्रवचन चाहे उत्सव के मौके पर हो रहा हो या शोकसभा में, मेरी गति सब जगह है। मैं समानधर्मा हूँ।

उसका वक्तव्य सुनकर बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। शायर इकबाल की घोषणा कि 'मजहब नहीं सिखाता आपस मैं बैर रखना' के बावजूद अनेक मजहब और मजहबी आपस में लड़ रहे हैं और बहुत सारे देवी-देवताओं की आपस में पटरी नहीं बैठ पा रही है। ऐसी हालत में भी यह अनुपम भक्त सबको समान भाव से देखता है और सभी के कार्यक्रमों में शामिल होता है। अपने क्षणभंगुर जीवन में ऐसे परमधार्मिक के दर्शन प्राप्त करने का मेरा यह पहला सौभाग्य था।

मैंने कहा आप धन्य हैं। ऐसे समर्पित भक्त मैंने सिर्फ सुने हैं, देखे कभी नहीं। वह बोला-अगर 'धन्य' का संबंध 'धन' से है तो मैं कोई धनी नहीं हूँ। बस गुजर-बसर ही हो पाता है। अपनी हालत तो कबीर के कहे शब्दों से कुछ कम ही है। 'साई एता दीजिए जा में कुटुम्ब समाय' के बाद साधु के लिए कुछ नहीं बचता-वचता। जब मैंने पूछा कि आपको ऐसी वृत्ति धारण करने की प्रेरणा कैसे मिली तो वह मौन हो गया। कुछ देर की चुप्पी के बाद अपने श्रीमुख से जो उद्गार उगले वे काफी क्रांतिकारी किस्म के थे।

सत्संगों में जाने की प्रेरणा उसे रोजगार की तलाश में भटकते समय प्राप्त हुई। उसे न सत्संग से कोई मतलब है न प्रवचन से। न उत्सव से कुछ लेना-देना है न ही शोक सभा से। अगर इनसे कोई लगाव है तो सिर्फ इतना कि बस, ये होते रहें। दर असल उसका लगाव तो सत्संगियों और सत्संगिनियों से है और उनसे भी ज्यादा उनके जूताधारी चरणों से। जिस तरह लक्ष्मण की दृष्टि सदा सीता के चरणों की ओर रहती थी उसी तरह यह भक्त भी अपनी आँखों और गरदन का कोण इस प्रकार से सेंट करके रखता है कि नजर सत्संगियों के चरणों पर ही केन्द्रित रहे। यदि राम, सीता का फोटो दिखाकर लक्ष्मण से पूछते कि लक्ष्मण यह देवी कौन हैं, तो वह उत्तर देता-भ्राता! इस देवी के चरण दिखाओं, या चरणों का कोई आभूषण दिखाओ तभी पहचान सकता हूँ। यदि यही सवाल लक्ष्मण की बजाए राम इस भक्त से पूछते तो यह उत्तर देता-आर्य पुत्र! फोटो दिखाकर लज्जित मत करो। देवी के जूते दिखाओ तभी पहचान कर सकता हूँ। और अगर उसे कैमरा देकर कहते-हे सौम्य! अमुक भक्तिन का फोटो खींच तो यह फटाक से उसके चरणों का फोटो खींच देता। चरणों के भी केवल उसी भाग का जो जूतों से ढका रहता है। इस प्रकार यह अनोखा भक्त तो केवल चरणों में फंसे जूतों को पहचानता है। जूते रहित चरणों पर या मुखमंडल पर डालकर उसने अपनी दृष्टि को कभी कलुषित नहीं होने दिया। सतयुग में भी दुर्लभ, इस कलियुगी महामानव के आचारवान जीवन को जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए जो भावी तुलसीदास आगे आएंगे वे भी मेरी तरह सौभाग्य को प्राप्त होंगे।

सत्संग के अवसर पर वह नम्रता की साक्षात् मूर्ति बनकर प्रवेश-द्वार के पास खड़ा हो जाता है और भीतर जाते भक्तजनों को नतमस्तक होकर प्रणाम करता है। अगर अवसर शोकसभा का हो तो गमगीन चेहरा बनाकर हॉल या शामियाने के दरवाजे के आस-पास ही रहता है। अनेक शोकालु उसे देखते हैं और उससे भी ज्यादा गमगीन चेहरे का अभिनय करते हुए पास से गुजर जाते हैं। इस दौरान नीची दृष्टि वाला वह विनम्र भक्त अपनी पारखी नजरों में दर्ज कर चुका होता है कि 'रिसेल वैल्यू' की दृष्टि से कितने जूते अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सत्संग शुरू हो जाता है। हालत यह होती है कि भीतर भक्तगण ध्यानमग्न और बाहर वह 'शिवसंकल्पी' ध्यानमग्न। भक्तगणों के हृदय में शायद ही भगवान उस गहराई से पैठ पाया हो जिस गहराई से उसके हृदय में जूते बैठ चुके होते हैं। भक्तों के मन में तो शायद ही कभी भगवान की छवि उभरी हो लेकिन उसके मन से जूतों की छवि कभी निकली नहीं। राम को पार उतारने वाले केवट की नाव चाहे तरने से बच गई थी लेकिन इस भक्त की चरण या हस्तधूलि जिन जूतों का स्पर्श कर लेती है वे अपने स्वामी के बंधन से सदा के लिए मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

सत्संगों में जाने के परिणाम स्वरूप उसे महीने भर में जो 'आत्मिक' उपलब्धि होती है वह अच्छी क्वालिटी के साथ-सत्तर जोड़े जूतों की 'रिसेल वैल्यू' के बराबर होती है। कभी-कभार उसके कर-कमलों को दानपात्र या थाली की सफाई करने का सुअवसर भी मिल जाता है। ले-देकर यही उसके धंधे का बोनस है। रही जोखिम या 'रिस्क' की बात वह तो थोड़ा-बहुत सभी धंधों में होता ही है। सब जानते हैं कि इष्ट प्राप्ति के लिए भक्तों को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं। घनघोर तपस्याएँ करनी पड़ती हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि भक्त भगवान के एकदम करीब पहुँचने को हैं लेकिन ठीक उसी समय मोहक रूप धारण करके कोई आसुरी शक्ति बीच में कूद पड़ती है और भक्त को अपने कब्जे में कर ले जाती है। इष्ट प्राप्ति कोई खेल नहीं हैं, खांडे की धार पर चलना है। कबीर ने तो साफ-साफ कह दिया था - 'जो घर जारै आपना सो चलै हमारे साथ'। समानधर्मा की सिद्धि में भी अनेक आसुरी शक्तियाँ बाधा पैदा करने के लिए तैयार रहती है ये शक्तियाँ उन भक्तों का रूप धारण किए सत्संग भवन में ही मौजूद होती हैं जिनका ध्यान प्रवचन में नहीं लगता और जो इधर-उधर ताकते हैं, या जिनके घुटनों और पीठ में दर्द रहता है और जो टिककर नहीं बैठ सकते, या वे जो आध्यात्मिक शंकाओ के समाधान की अपेक्षा लघु शंकाओं को अधिक महत्त्व देते हुए बार-बार प्रवचन के बीच में उठते रहते हैं।

कभी-कभी तो साक्षात् दैत्य का रूप धारण करके जूतों की पहरेदारी के लिए ही कोई आ खड़ा होता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में एकाग्र वह समानधर्मा इन सब बाधाओं को दूर करने के मंत्र जानता है जिनका जिक्र यहाँ करके मैं आपके मन में इस धंधे के प्रति आकर्षण और उस बेचारे की कमाई को खतरा पैदा नहीं करना चाहता। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि उसका बाधा निवारण मंत्र निक्रिष्य हो जाता है और दुर्घटना घट जाती है। ऐसी हालत में उसे जूतों से तो हाथ धोना ही पड़ता है, जूते खाने भी पड़ते हैं। दरोगा जी को दो-चार जोड़े जूते, नकद या वस्तुरूप में, भेंट चढ़ाने पड़ते हैं, सो अलग। अगर उसके धंधे के ये छोटे-मोटे जोखिम दूर हो जाएँ तो वह सत्संगियों की सेवा अधिक समर्पित भाव से कर सकता है।

पुनश्च : जहाँ तक मेरी बात है मुझे न तो सत्संग का शौक है न सत्संगियों का। थोड़ा-बहुत लिखने-विखने का शौक जरूर है। इसी शौक का मारा एकांत सेवन करते हुए, पार्क में बैंच पर बैठकर, यह लेख लिख रहा था। जब लेख खत्म करके चलने लगा तो अपने खुद के चर्मचक्षुओं को बोध हुआ कि बैंच के नीचे की ओर निकाल कर रखे गए जूते मुझ से पहले ही प्रस्थान कर चुके हैं। जहाँ तक मुझे याद है एक आदमी मेरे पास से गुजरा था। बड़ा भला आदमी लगता था। मुझे लेखक समझकर उसने नमस्ते भी की थी।

खैर! बड़ी प्रसन्नता हुई कि समानधर्मा बिरादरी का कार्यक्षेत्र मंदिरों की चारदीवारी तक सीमित न रहकर काफी विस्तृत हो गया है और हरे-भरे पार्क भी उसकी रेंज के भीतर आ गए हैं। सर्वधर्म-समभाव के अग्रदूत समानधर्माओं का भविष्य इस भूखंड पर काफी उज्ज्वल है।

- एम-93, साकेत, नई दिल्ली-17
मो. 9818211771

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

133वें जन्मदिवस (6 सितम्बर) पर विशेष

'महर्षि दयानन्द का स्वप्न ही जिनका अपना स्वप्न था'

वैदिक विद्वान शिरोमणि पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय

स्वस्थ व आधुनिक समाज के निर्माण के लिए अन्धविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन व समूलोच्छेद अपरिहार्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के निष्ठावान अनुयायी पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने अपने जीवन काल में मौखिक व्याख्यानों एवं लेखनी के द्वारा दीर्घकाल तक यह कार्य करके अविस्मरणीय समाज सेवा की।

जिला एटा में काली नदी के तट पर बसे नदरिया ग्राम में भाद्र शुक्ल 13, सम्वत् 1938 विक्रमी (6 सितम्बर सन् 1881) मंगलवार को एक कायस्थ कुलश्रेष्ठ परिवार में आपका जन्म हुआ। जब आपकी आयु मात्र 10 वर्ष की थी तब आपके पिता श्री कुंज बिहारी लाल जी का देहावसान हो जाने के कारण आपकी माता श्रीमति गोविन्दी देवी ने आपका पालन पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा, अभावग्रस्त होने के बावजूद, धैर्य एवं स्वाभिमान पूर्वक की।

आपकी शिक्षा सन् 1887 में नदरिया के एक मौलवी से उर्दू एवंफारसी के अध्ययन से आरम्भ हुई। इसके पश्चात् भाभरा की एक पाठशाला तथा सन् 1892-95 की अवधि में एटा की एक तहसील के स्कूल में आपने अध्ययन किया। मिडिल की परीक्षा में आप पूरे प्रान्त में चतुर्थ स्थान पर रहे। मिडिल के बाद आपने अलीगढ़ के एक राजकीय स्कूल से सन् 1901 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। यहां आप अपने ताऊजी के पुत्र श्री राधा दामोदर के पास रहे। सन् 1898 में छात्रावास में आप बेलून के आर्य छात्रों के सम्पर्क में आकर आर्य समाज के अनुयायी बने। हुक्का पीने जैसी बुरी आदत आपने त्याग दी। आर्य समाज के प्रभाव से ही आपके जीवन में देवत्व का प्रादुर्भाव हुआ। अपने संस्मरण में आपने लिखा है कि आर्य समाज के सम्पर्क में आकर आप अन्धकार से प्रकाश में आये। दैनिक संन्ध्या एवं हवन तो आपने आरम्भ किया ही, सत्यार्थ प्रकाश जैसी कालजयी पुस्तक आप हमेशा अपने साथ रखते थे।

आर्य समाज सत्याचरण का पाठ पढ़ाता है। उन दिनों अलीगढ़ के चम्पाबाग में आर्य विद्वानों के प्रवचन हो रहे थे और आप छिपकर वहां जाते थे। इससे आपको आत्म गलानि हुई। अत: आप राजकीय विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री कैसविन के पास सत्संग में जाने की अनुमति लेने हेतु पहुंचे। अनुमति न मिलने पर आपने आर्य समाज के नेताओं को इसकी सूचना दी जिन्होंने आर्य छात्रों हेतु अलीगढ़ में एक शिक्षण संस्था ''वैदिक आश्रम'' की स्थापना की। इस संस्था में प्रवेश पाने वाले आप प्रथम छात्र थे। राजकीय विद्यालय में आपको शिक्षा शुल्क की छूट थी एवं छात्रवृत्ति भी मिलती थी। वैदिक आश्रम में प्रवेश लेने से इन सुविधाओं से आप वंचित हो गये। सत्य एवं धर्म के लिए आपका यह प्रथम त्याग था। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में सोत्साह सक्रिय जीवन व्यतीत करते हुए आपने अंग्रेजी एवं दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया।

आपका कर्मक्षेत्र शिक्षा से जुड़ा रहा। सन् 1904 में आप बिजनौर में राजकीय स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। इसी काल में आपने तत्कालीन पौराणिक मान्यताओं के विरूद्ध अपनी पत्नी श्रीमति कलादेवी का प्रयाग में यज्ञोपवीत एवं पुत्री आयु. सुदक्षिणा का उपनयन संस्कार भी कराया। उन दिनों प्रयाग में यह किसी महिला व कन्या के यज्ञोपवीत संस्कार की प्रथम घटना थी।

पंडित जी बिजनौर एवं प्रयाग के आर्य समाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। यहां आप आर्य समाज के उत्सवों पर आमंत्रित विद्वानों के भोजनादि की व्यवस्था करते थे। परिवार के लोग भी आपके कार्य में हाथ बंटाते थे। उत्तर काल में आप आर्य समाज चौक, प्रयाग के प्रधान, प्रयाग की आर्य कन्या पाठशाला के प्रबंधक, हिन्दू अनाथालय, मुट्ठीगंज के प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के 1946 से 1951 तक मंत्री रहे। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा ने भी आपको अपनी सभा का सदस्य मनोनीत किया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपकी पुस्तक ''आस्तिकवाद'' पर अपना सर्वोच्च मंगला प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार में प्राप्त सम्पूर्ण धनराशि आपने आर्य समाज, प्रयाग को दान दे दी और इससे वहां अपनी पत्नी के नाम पर एक सत्संग हाल बनवाया। यहां हम यह कहना चाहेंगे कि यह पुस्तक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं स्वाध्याय के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कुछ समय पूर्व विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली एवं श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य न्यास, हिण्डोन सिंटी से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये, ऐसा हम अनुभव करते हैं।

सन् 1906-07 में बिजनौर आर्य समाज के अपने मंत्रित्व काल में आप ''आर्य मुसाफिर'' के लिए नियमित लिखते रहे। इन्हीं दिनों आपने संस्कृत भाषा का भी गम्भीर अध्ययन किया। जीवन काल की संध्यावेला में आपने अनुभव किया कि शास्त्रार्थ से प्रतिपक्षी कतराते हैं। अत: आर्य समाज को विपक्षियों के उन स्थानों पर जाकर प्रचार करना चाहिये जहां वह कार्य करते हैं। इस योजना को आपने कार्यरूप दिया। सत्य व असत्य के निर्णयार्थ आपने एक बार बाराबंकी में पादरी ज्वालासिंह से गिरिजाघर में जाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में शास्त्रार्थ किया।

बिजनौर के राजकीय विद्यालय की नौकरी को आपने अपने स्वाभिमान के विरुद्ध अनुभव किया। आपकी धर्मपत्नी ने आपकी चिन्ता को समझकर नौकरी से त्याग पत्र देने की सहमति देकर भविष्य की पारिवारिक जीवन की सभी कठिनाईयों को सहर्ष सहन करने की अपनी इच्छा व्यक्त कर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। अत: सन् 1918 में राजकीय विद्यालय की सेवा से त्यागपत्र देकर आपने डी.ए.वी. स्कूल, प्रयाग के मुख्याध्यापक का कार्य आरम्भ किया जो उन दिनों 10,600 रूपये घाटे में था। अध्यापकों के वेतन के लिए स्कूल में धन नहीं था। ऐसी स्थिति में स्कूल में कार्य आरम्भ किया और इस समस्या को हल करने के लिए आपने सबसे कम वेतन पाने वाले अध्यापक को पहले और स्वयं सबसे बाद में वेतन लेने की परम्परा डाली। इससे कर्मचारियों में व्याप्त असन्तोष दूर हो गया। 58 वर्ष की आयु में भी आप पूर्ण स्वस्थ थे और स्कूल के नियमानुसार पद पर कार्य कर सकते थे। उन दिनों हैदराबाद रियासत में हिन्दू जनता पर किये जा रहे अन्याय एवं हिन्दूओं के धार्मिक अधिकारों के उल्लघंन के कार्यों के विरूद्ध अपनी संलग्नता के कारण आपने सेवा से त्याग पत्र दे दिया। इस डी.ए.वी. कालेज, प्रयाग के बारे में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि इसकी आधारशिला अथर्ववेद के भाष्यकार वैदिक विद्वान पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने 14 मई 1916 को रखी थी।

पंडित जी सन् 1918 में पं० मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रयाग में स्थापित सेवा समिति के आजीवन सदस्य बनकर सहयोग करते रहे। आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उपसभापति भी रहे। 30 सितम्बर, 1931 को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के झांसी अधिवेशन के दर्शन सम्मेलन के आप सभापति बनाये गये थे। पंड़ित जी इण्टरमीडिएट बोर्ड, उत्तर प्रदेश के सदस्य भी रहे। अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को परीक्षा एवं अध्यापन का माध्यम बनाने का प्रस्ताव भी आपने ही पहली बार किया और इसके लिए लगातार 3 वर्ष संघर्ष करके हिन्दी को कुछ विषयों के माध्यम के रूप में चुनने की छूट दिलाई। यह उल्लेखनीय है कि आपने अंग्रेजी के अस्वाभाविक एवं बोझिल रूप को बोर्ड के सदस्यों के सम्मुख रखा एवं उन्हें अपने तर्कों एवं युक्तियों से सहमत किया।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में आपको सत्याग्रह के फील्ड मार्शल महात्मा नारायण स्वामी द्वारा आन्दोलन के पक्ष में पुस्तकें तथा प्रतिपक्षियों के आक्षेपों का उत्तर तैयार करने का कार्य दिया गया। आरम्भ में शोलापुर में आयोजित आर्य महासम्मेलन में भी आप सम्मिलित हुए थे। मार्च 1939 में प्रयाग लौटकर आप मई में पुन: दिल्ली आ गये और सत्याग्रह को सफल बनाने में जुट गये। जून 1939 में आपको सत्याग्रह का पक्ष ब्रिटिश सरकार व संसद के सम्मुख रखने हेतु निजाम के फरमानों व सरकार के पत्रों का परीक्षण एवं उसकी प्रतियां प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया जिसे आपने अत्यन्त परिश्रम करके सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। अगस्त 1939 में यह सत्याग्रह सफलता प्राप्त कर समाप्त हुआ। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी का इस ऐतिहासिक सत्याग्रह में अविस्मरणीय योगदान रहा। आपके प्रयासों से दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार की नींव पड़ी। हैदराबाद सत्याग्रह के पश्चात् आपने दक्षिण के अनेक प्रदेशों का भ्रमण कर प्रचार किया जिसके परिणाम स्वरूप मदुरै में आर्य समाज की स्थापना हो सकी। मदुरै में आर्य महासम्मेलन का स्वप्न एवं उसे क्रियात्मक रूप देने का श्रेय भी आपको ही है जिसमें क्रान्तिवीर वीर सावरकर, महाशय कृष्ण, डा. मुंजे, श्री निर्मल चटर्जी, लाला नारायणदत्त शामिल हुए थे।

हैदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति पर हैदराबाद के युवकों को आर्य समाज के प्रचार हेतु तैयार करने के लिए शोलापुर में एक उपदेशक विद्यालय खोला गया जिसके आचार्य पं० गंगाप्रसाद जी थे। 20-25 युवकों को प्रशिक्षण दिया गया। पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, पं० महेन्द्र कुमार शास्त्री एवं पं० गोपदेव जी जैसे दार्शनिक विद्वानों ने अध्यापक के रूप में इस उपदेशक विद्यालय में अध्ययन किया। यहां रहते हुए आपने दक्षिण भारत के राज्यों

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

सराहनीय कार्य किया था, से भी भेंट की। कार्यकर्ताओंने बताया कि उन्हें सार्वदेशिक सभा की ओर से पेंशन दी जाती थी, किन्तु गत गई वर्षों से वह प्राप्त नहीं हो रही है। इस पर उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उन्हें कुछ सम्मान राशि प्रदान की और शाल ओढ़ाकर सम्मानित भी किया। तदुपरान्त वहां के आर्यसमाज के अधिकारियों से चर्चा की और आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम् को प्रचार का केन्द्र बनाकर कार्य करने की रणनीति बनाई गई। इसके अन्तर्गत अक्तूबर मास में त्रिवेनवली, मदुरै और मीनाक्षीपुरम् में वैदिक अग्निहोत्र एवं सैद्धान्तिक शिविरों का आयोजन किया जाएगा जहां तमिल के ही प्रशिक्षण दिया जाएगा। दक्षिण भारत में लगने वाले सभी पुस्तक मेलों में स्टाल बुक कराकर वैदिक साहित्य का प्रचार किया जाएगा और क्षेत्रीय भाषायी साहित्य पर जोर दिया जाएगा। त्रिवेन्द्रम के पुस्तक मेले में भी प्रचार किया जाएगा और दक्षिण भारत में रहने वाले आर्य विचारधारा से प्रेरित/प्रभावित महानभावों को संगठित किया जाएगा।

सभा के उप प्रधान एवं दक्षिण भारत के प्रभारी डॉ. राधाकृष्ण वर्मा जी ने दक्षिण भारत में आर्यसमाज को मजबूत करने की दिशा में बढ़ने को अच्छा कदम बताया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने इसकी सूचना पाने पर कहा कि ऐसे कार्यों से तमिलनाडु और केरल सहित समस्त द. भारत में आर्यसमाज के संगठन को मजबूती प्राप्त होगी।

दक्षिण भारत में आर्यसमाज को मजबूत करने की दिशा में अच्छा कदम – डॉ. राधाकृष्ण वर्मा

तमिलनाडु में आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम् के दौरे पर पहुंचने पर सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान एवं दक्षिण भारत के प्रभारी डॉ. राधाकृष्ण वर्मा एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य का स्वागत।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि नए क्षेत्रों में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में साधनों कमी नहीं आने दी जाएगी।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने क्षेत्र के पुराने आर्य समाजियों से सम्पर्क साधने और उन्हें सम्मानित करके पुनः सक्रिय करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जिन-जिन आर्यसमाजों में शिथिलता आई है उनकी भूमि पर कुछ न कुछ नया कार्य आरम्भ करके वैदिक धर्म के प्रचा को गति दी जाएगी।

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/ परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान- निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-*मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

मीनाक्षीपुरम् की जीर्ण यज्ञशाला में वर्षों बाद हवन किया गया। आर्यसमाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित करते डॉ. राधाकृष्ण वर्मा एवं श्री विनय आर्य।

"दिल्ली के विभिन्न आर्य विद्यालयों में अध्यापिकाओं की कार्यशालाएँ सम्पन्न"

विद्या इस लोक में आनंद से जीना सिखाती है और लोक व परलोक दोनों को सिद्ध कर देती है - ब्र० राजसिंह आर्य

विद्यालय में बच्चों को उनके कर्त्तव्यों का ज्ञान अवश्य कराया जाना चाहिए। - विनय आर्य

ईश्वर के अस्तित्व का बोध होने पर प्रत्येक व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण से कार्य करता है और वह गलत कार्य करना छोड़ देता है - सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् दिल्ली

आर्य विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाएँ विद्यालयों में बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सके ऐसा प्रयास आर्य विद्या परिषद् का निरन्तर रहा है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए इस सभा में आर्य विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं की गोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं। इसी श्रृंख्ला में एम.डी.एच. इन्टर नेशनल द्वारका में 25 जून (बुधवार) को कार्यशाला आयोजित हुई। इस कार्यशाला में एम.डी.एच. इन्टरनेशनल द्वारका, एम.डी.एच. पब्लिक जनकपुरी, और एम.डी.एच. पब्लिक स्कूल सुभाषनगर, के अध्यापक/अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

विद्यालय के प्रबंधक श्री सचदेवा जी और प्रधानाचार्या श्रीमती नन्दिनी बिदोलिया जी, श्रीमती शकुन्तला आर्या भी कार्यशाला में उपस्थित रहे।

इसी क्रम में बढ़ते हुए 5 जुलाई को कार्यशाला का आयोजन एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, प.पंजाबी बाग में हुआ। एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, व दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर के शिक्षक/ शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यशाला में दोनों विद्यालयों के अधिकारी श्री राजीव आर्य, श्री अरविन्द नागपाल, श्री अशोक मेहतानी श्री धवन जी, योगेश आर्य, डॉ० आर.पी. सिंह, श्री बलदेव आर्य जी, श्री विजेन्द्र आर्य जी उपस्थित थे।

कार्यशाला का क्रम आगे बढ़ा और 26 जुलाई को पूर्वी दिल्ली के रतन देवी आर्य कन्या सी. सै. स्कूल में और 31 जुलाई को दयानन्द माडल स्कूल, विवेक विहार में अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया। इन गोष्ठियों में आर्य विद्या परिषद् के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने शिक्षक वर्ग को ईश्वर के स्वरुप की चर्चा करते हुए ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखकर कार्य करने, सदैव सकारात्मक सोच से कार्य करने, बच्चों के प्रति दयालु व न्याय प्रिय रहने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार परिषद् के महामंत्री श्री विनय आर्य ने अध्यापिकाओं से बच्चों को उनके कर्त्तव्यों का ज्ञान अनिवार्य रुप से करवाने, बच्चों में आत्म विश्वास बढ़ाने, ईश्वर में अटूट विश्वास रखने आदि गुणों को भी विकसित करने की भी अपेक्षा रखी। उन्होंने बताया कि अगर मनुष्य अपने किसी भी कार्य को करने में अपनी पूरी शक्ति लगाकर भगवान से उसे पूर्ण करवाने के लिए प्रार्थना करें तो वह प्रार्थना अवश्य सुनी जाती है।

आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने इन कार्यशालाओं में 'उत्तम शिक्षक' कैसे बना जाए इस शीर्षक के अन्तर्गत चर्चा करते हुए बहुत ही सरल व व्यावहारिक ढंग से ईश्वर के अस्तित्व का बोध कैसे हो? सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे रखा जाए? हम अपने में सफल किस प्रकार हो? अपने ज्ञान को निरन्तर कैसे बढ़ाया जाए? विद्यालय में विद्यार्थियों को अनुशासित कैसे रखा जाए? जीवन की

- शेष पृष्ट 8 पर

आर्यसमाज को संगठनबद्ध करने तथा वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यों को गति देने हेतु

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 3 अगस्त, 2014 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज के कार्य, गतिविधियों, संगठन सम्बन्धी जानकारी देने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार उत्तरी दिल्ली में एक, उत्तर-पश्चिम में एक, पश्चिम दिल्ली में दो, दक्षिण दिल्ली में दो, पूर्वी दिल्ली में एक तथा मध्य दिल्ली में भी एक बैठक आयोजित की जाएंगी।आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। बैठक का दिन, समय, स्थान एवं संयोजक निम्न प्रकार निश्चित किए गए हैं। समस्त उपस्थित सदस्यों के लिए सायंकालीन भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। - **विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9958174441**

उत्तरी-पश्चिम एवं ग्रामीण दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज सरस्वती विहार
दिनांक : 7 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र आर्य
मो. 9811476663

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

स्थान : आर्यसमाज प्रीत विहार
दिनांक : 13 सितम्बर, 2014 (शनि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र रैली
मो. 9810855695

मध्य दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज हनुमान रोड
दिनांक : 21 सितम्बर, 2014 (रवि)
समय : प्रात: 10:30 से 2:30 बजे
संयोजक : श्री अरुण वर्मा
मो. 9540086759

पश्चिमी दिल्ली -1

स्थान : आर्यसमाज कीर्ति नगर
दिनांक : 5 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य
मो. 9540077858

पश्चिमी दिल्ली -2

स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी सी-3
दिनांक : 12 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान
मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली

स्थान : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1
दिनांक : 26 अक्तूबर, 2014 (रवि)
समय : दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी
मो. 9810014097

आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण कृपया ध्यान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इस श्रृंखला में पहले **ग्रामीण दिल्ली एवं उत्तर पश्चिम दिल्ली** की गोष्ठियां अलग-अलग निर्धारित की गई थी। इसमें सुधार करते हुए दोनों क्षेत्रों की बैठक अब एक साथ **7 सितम्बर, 2014 को दोपहर 2:30 बजे से आर्यसमाज सरस्वती विहार** में ही आयोजित की जाएगी। इसी प्रकार दक्षिण दिल्ली क्षेत्र की भी दो गोष्ठियां आयोजित की जानी थी, जिसे स्थगित करके एक ही कर दिया गया है। अब सम्पूर्ण दक्षिण दिल्ली की एक ही गोष्ठी आयोजित की जाएगी जोकि **आयसमाज ग्रेटर कैलाश-1 में 26 अक्तूबर, 2014 को दोपहर 2:30 बजे से** आयोजित होगी। उत्तरी दिल्ली क्षेत्र की गोष्ठी अभी निश्चित नहीं हो सकी है। समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र की गोष्ठी में अपने सहयोगियों के साथ अवश्य ही भाग लें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन उपलब्ध

सभा द्वारा संचालित एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं भी इस अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध रहेंगी। वेद प्रचार मंडलों से निवेदन है कि वेद प्रचार वाहन अपने यहां मंगवाकर प्रचार कार्य करें। प्रचार वाहन मंगाने हेतु श्री एस.पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

पृष्ठ 6 का शेष

महर्षि दयानन्द का स्वप्न ही ...

में आर्य समाज का प्रचार भी किया। शोलापुर में 400-500 विद्वानों की उपस्थिति में आपकी जैनमत के एक विद्वान से दर्शनों पर वार्ता हुई। आपकी विद्वता से प्रभावित प्रतिपक्षी जैनी विद्वान ने कहा कि उपाध्याय जी की ऊहापोह एवं सूझबूझ से मैं प्रभावित हूं। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री के पद के कार्यकाल में आपने सार्वदेशिक प्रकाशन लिमि. की स्थापना कर आर्य साहित्य के प्रकाशन के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वैदिक विद्वान पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड को साथ लेकर आपने दिल्ली स्थित विदेशी राजदूतों को आर्य साहित्य भेंट करने की एक योजना का भी श्रीगणेश किया था जिसका उद्देश्य विदेशियों को आर्य विचारधारा का ज्ञान कराना था।

सन् 1950 में आप दक्षिणी अफ्रीका में वैदिक धर्म प्रचारक के रूप में भेजे गए। सन् 1951 में आप सिंगापुर एवं बैंकॉक की प्रचार यात्रा पर गए। आपके पश्चात् प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं आपके पुत्र डॉ. सत्य प्रकाश जी ने भी विश्व के अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर आपकी आंकाक्षा को साकार किया।

25 अगस्त 1968 को आपका देहान्त हुआ। प्राणोत्सर्ग के समय आप अपने पुत्र डॉ. सत्य प्रकाश जी से बातें कर रहे थे। बातें करते हुए आपका सिर उनकी गोद में गिर पड़ा। उपदेशक विद्यालय में आपके सहयोगी आचार्य महेन्द्र कुमार शास्त्री ने आपका मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि आप ऋषि दयानन्द के परमभक्त, सैद्धान्तिक ज्ञान के रहस्यविद्, तपस्वी, त्यागी, स्वाध्यायशील, आर्य समाज के नेता होकर भी परम लेखक, लेखनी के धनी तथा देश-विद्वतमुकुटमणि हैं। पंड़ित जी को गुदड़ी का लाल बताकर शास्त्री जी लिखते हैं कि उन्हें पाकर आर्य समाज सचमुच गौरवान्वित हुआ था।

पंडित जी ने अपने जीवनकाल में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू में विपुल वैदिक साहित्य की रचना की है। आस्तिकवाद, जीवात्मा, अद्वैतवाद उनकी प्रमुख दार्शनिक पुस्तकें हैं। अन्य विषयों पर भी उन्होंने पर्याप्त लिखा है। शंकरभाष्यालोचन, मुक्ति से पुनरावृति, मैं और मेरा भगवान, मीमांसा प्रदीप, कर्मफल सिद्धान्त, आर्य समाज, सनातन धर्म और आर्य समाज, सायण और दयानन्द आदि उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। उनकी पुस्तकों के गुजराती, मराठी, बंगला, तमिल एवं तेलुगू आदि भाषाओं में अनुवाद भी हुए है। अपने जीवन काल में आपने आर्य जगत की पत्र पत्रिकाओं में सैकड़ों विद्वतापूर्ण रोचक व प्रभावशाली लेख लिखे। लगभग 300 छोटे बड़े ग्रन्थों के प्रणेता और आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आपकी विस्तृत जीवनी ''व्यक्ति से व्यक्तित्व'' नाम से लिखी है श्री जिज्ञासु जी ने आपकी अधिकांश पुस्तकों को ''गंगा ज्ञान सागर'' के नाम से चार वृहदाकार खण्डों में प्रकाशित किया है। जिज्ञासु जी स्वयं को पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय का मानस पुत्र मानते हैं। डॉ. सत्य प्रकाश सरस्वती, उपाध्याय जी के बड़े पुत्र थे। आर्य समाज बिजनौर में आपका जन्म हुआ था। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विभाग के अध्यक्ष रहे। आप रसायन शास्त्र में डी.एस.सी. की उच्च शोधोपाधि से अलंकृत थे और लगभग दो दर्जन शोधार्थियों को आपने रसायन विज्ञान में पी.एच.डी. कराई। आप देश-विदेश के शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के सम्पर्क में भी रहे और अनके बार विदेश यात्रा कर प्रमुख वैज्ञानिकों से मिलते रहे। आपका अंग्रेजी का ज्ञान भी अत्यन्त उच्च स्तर का था। हमने विश्व व भारत में विख्यात एक वैज्ञानिक सस्थान ''भारतीय पैट्रोलियम संस्थान, देहरादून'' में आपके विज्ञान विषय के बिना नोट्स के सहारे धारा प्रवाह अंग्रेजी में व्याख्यान सुने हैं। आप विलक्षण बुद्धि से सम्पन्न थे जिसका ज्ञान आपके प्रवचनों को सुनकर हुआ करता था। आपने अनके छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे। आपका सबसे बड़ा लेखकीय कार्य अंग्रेजी भाषा में चार वेदों का भाष्य है जो अनके खण्डों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली से मात्र दो हजार रूपयों में उपलब्ध है। हमने डॉ. सत्य प्रकाश जी के प्रवचन आर्य समाज देहरादनू में 30-35 वर्ष पूर्व सुने थे जिनका हम पर गहरा प्रभाव हुआ था। आज भी उनके कुछ शब्द हमें स्मरण हैं। आपने अपने व्याख्यान में एक महत्त्वपूर्ण बात यह कही थी कि ईश्वर ने सृष्टि को बनाया और इसमें एक सूर्य की रचना की जो प्रकाश व ताप देता है। उसी ने सूर्य को सार्थकता प्रदान करने के लिए हमें व हमारी आंखों को बनाया है। इसी प्रकार शरीर में जितनी भी इन्द्रियां व अवयव हैं, उनकों सार्थकता प्रदान करने के लिए जगदकर्ता ने सृष्टि में उनके विषय बनाये हैं। पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय ने अपने जीवन में समाजिक हितों को पारिवारिक हितों पर वरीयता देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को अपना स्वप्न बनाया था। उनकी सभी उपलब्धियों की गणना करना अत्यन्त कठिन कार्य है। आर्य समाज उनको पाकर धन्य हुआ और वह भी आर्य समाज को पाकर धन्य हुए। उनकी एक उपलब्धि यह भी है उन्होंने आर्य समाज को एक वैज्ञानिक तथा अंग्रेजी का वेद भाष्यकार पुत्र दिया जिसने आर्य समाज को नई पहचान दी। हमारा सौभाग्य रहा कि हमने उनके अनेक प्रवचन सुने और उन्हें स्मरण कर आज भी हमें रोमांच हो उठता है। उन डॉ. सत्यप्रकाश जी की अनुपस्थिति में हम आर्य समाज में सूनापन का सा अनुभव करते हैं। उनकी 133वीं जयन्ती पर हम उनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

-मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2, दूहरादून-1

आर्यसमाज दयानन्द विहार के
29वें वार्षिकोत्सव पर
11000 गायत्री महायज्ञ
17 से 21 सितम्बर, 2014

प्रतिदिन प्रातः 7:30 से 9:30 बजे
भजन–प्रवचन : सुश्री सविता आर्या जी
श्री बच्चू सिंह जी आर्य
आर्य बाल सम्मेलन – 20 सितम्बर
समापन समारोह – 21 सितम्बर
प्रातः 10 से 1:30 बजे
अध्यक्षता : श्री हरीश कथूरिया
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी
आमन्त्रित वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार
सुश्री सविता आर्या, आचार्य धर्मपाल आर्य,
श्री विनय आर्य
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– ईश नारंग, मन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के
48वें स्थापना दिवस पर
ध्यान योग विज्ञान शिविर
26 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 2014

ऋग्वेदीय बृहद् यज्ञ : प्रातः 8 बजे से
ब्रह्मा : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती
भजन : श्रीमती सन्तोष, सत्यपाल मधुर, रमेशचन्द्र आर्य, श्रीमती रामदुलारी
आर्य महिला जागृति सम्मेलन
30 सितम्बर – सायं 3 बजे से
योग सम्मेलन
1 अक्तूबर, 2014 प्रातः 10 बजे
चरित्र निर्माण सम्मेलन : सायं 3 बजे
आत्मस्वामी जन्मोत्सव–स्थापना दिवस
2 अक्तूबर, 2014 प्रातः 9 बजे से
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– दर्शन कुमार अग्निहोत्री, मन्त्री

आर्यसमाज यमुना विहार का वेद प्रचार सप्ताह
10 से 14 सितम्बर, 2014

भजन : श्री श्याम सुन्दर मेहता प्रवचन : सुश्री अंजली आर्या
भजन–प्रवचन : प्रातः 8:15 से 9:30 बजे सायं 7:30 से 9:30 बजे
समापन समारोह : 14 सितम्बर, 2014

– विश्वास वर्मा, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज यमुना विहार ब्लाक बी-1, दिल्ली-53

प्रधान : श्री कृष्ण कुमार सिंघल
मन्त्री : श्री विश्वास वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री वीर बहादुर ढींगरा

आर्यसमाज अर्जुन नगर गुड़गांव - 122001 (हरि.)

प्रधान : मा. सोमनाथ आर्य
मन्त्री : श्री लक्ष्मण पाहूजा
कोषाध्यक्ष : श्री अर्जुन देव मनचन्दा

आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय नई कालोनी, गुड़गांव (हरि.)

प्रधान : श्री भारत भूषण आर्य
मन्त्री : श्री प्रवीण मदान
कोषाध्यक्ष : श्री शिवदत्त आर्य

आर्यसमाज रोहतास नगर का
48वां श्रावणी पर्व महोत्सव
18 से 21 सितम्बर, 2014

यज्ञ भजन प्रवचन : प्रातः 6:45 से 9 बजे
प्रवचन : पं. ध्रुव कुमार शास्त्री
भजन : पं. भानु प्रकाश शास्त्री
पूर्णाहुति एवं समापन : 21 सितम्बर,14
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– सुखबीर सिंह त्यागी, मन्त्री

मानव सेवा प्रतिष्ठान, हुमायुपुर का
छात्रवृत्ति प्रदान समारोह
दिनांक : 12 अक्तूबर, 2014

स्थान : गुरुकुल गौतम नगर, न.दि.
समय : प्रातः 8:00 से 1:00 बजे
अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
उद्घाटन : डॉ. योगानन्द शास्त्री

–सोमदेव शास्त्री, प्रधान

आवश्यकता है

सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आसाम, नागालैंड तथा मध्य प्रदेश के झाबुआ जिलान्तर्गत संचालित महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानन्द आर्य विद्या निकेतन विद्यालयों को संचालित करने के लिए सेवाभावी, निष्ठावान, प्रबन्धकों की आवश्यकता है। गृहस्थियों/वानप्रस्थियों/गुरुकुल से निकले ब्रह्मचारियों/संस्कृत पृष्ठभूमि के आवेदकों, जिनमें जो प्रबन्धन कार्य करने की क्षमताएं एवं योग्यता रखने वालों को वरीयता दी जाएगी। आवास व्यवस्था एवं योग्यतानुसार उचित मानदेय प्रदान किया जाएगा। इच्छुक उम्मीदवार अपने बायोडाटा भेजें –

aryasabha@yahoo.com

आशुलिपिक चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के लिए एक हिन्दी आशुलिपिक की आवश्यकता है। आवेदक को डीटीपी कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी टाइपिंग का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। आर्यसमाज/गुरुकुल की पृष्ठभूमि के आवेदकों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। अपने आवेदन निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें–

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
9वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन
28 सितम्बर, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 9वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन **28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.)** में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम प्रति सम्मेलन **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें। जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **8 सितम्बर, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट पर 10 अक्तूबर, 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।

- श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

श्री कान्तिप्रकाश आर्य को वेद निपुण प्रमाण पत्र

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, रोहिणी के कर्मठ व्यक्तित्व एवं पूर्व प्रधान श्री कान्तिप्रकाश आर्य ने महर्षि सान्दिपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा पत्राचार से संचालित वेदनिपुण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। उन्होंने यह पाठ्यक्रम अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होकर न केवल अपना अपितु आर्यसमाज प्रशान्त विहार का भी गौरव बढ़ाया है, इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

– विनय आर्य, महामन्त्री

पुण्यतिथि पर यज्ञ

आर्यजगत के वैदिक विद्वान् पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी की तृतीय पुण्यतिथि श्री सत्येन्द्र आर्य जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि डॉ0 द्विवेदी महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्श अनुयायी एवं स्वमी दर्शनानन्द जी के प्रिय भक्त थे। उनका जीवन ऋषि तुल्य था वे भारतीय संस्कृति के पोषक थे। इस अवसर पर जनपद के अनेक गणमान्य महानुभावों एवं आर्यसमाज के सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी ने आगत अतिथियों एवं नगरवासियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

-डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी

स्व. श्री गुलाब सिंह राघव का 73वां जन्मदिवस मनाया

आर्यसमाज सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक स्व. श्री गुलाब सिंह राघव जी का 73वां जन्मदिवस 3 सितम्बर, 2014 को उनके निवास पर मनाया गया।

-राघव परिवार, 9971970309

आर्यसमाज एजीसीआर एन्कलेव
यज्ञ-वेद कथा : 14 से 16 सितम्बर
प्रातः 7:30 से 9:30 सायं 3 से 6 बजे
भजन–प्रवचन : सुश्री सविता आर्या जी
श्री बच्चू सिंह जी आर्य
स्थान : 243 एजीसीआर के सामने

– आर्य डॉ. ओ. पी. भटनागर, मन्त्री

दिल्ली सभा कार्यालय निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के सभी आर्य समाजों के सुचारु रुप से संचालन की व्यवस्था, साहित्य सृजन एवं उनके प्रकाशन की व्यवस्था तथा पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन की व्यवस्था करती है। सभा का कार्य दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। अतः सभा में कर्मचारियों के कार्य करने के लिए स्थान की कमी को देखते हुए सभा कार्यालय के विस्तार का कार्य प्रारम्भ किया गया है जिससे सभी कर्मचारियों के कार्य करने के लिए उपयुक्त (पर्याप्त) स्थान हो।

अतः दानवीर महानुभावों से अपील की जाती है कि- निमार्ण कार्य के यज्ञ में दानरुपी आहुति अवश्य प्रदान करें, जिससे यह निमार्ण कार्य शीघ्रता से पूर्ण हो और सभा के कार्यों में व्यवधान न आए। दानवीर व्यक्ति का ही यश बढ़ता है। कृपया अपनी दानराशि चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। **सभा को दिया गया समस्त दान आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।**

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

छपते-छपते

श्री योगेश मुंजाल जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य एवं हीरो मोटो कोर्प (हीरो होण्डा) परिवार के श्री योगेश मुंजाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का 3 सितम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार लोदी रोड स्थित श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 सितम्बर, 2014 से रविवार 7 सितम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 04 /05 सितम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 सितम्बर, 2014

सभा के वैदिक साहित्य विभाग की सेवाएं लें

सभी पाठक सुधिजनों की सूचनार्थ है कि– ऋषि दयानन्द के द्वारा पुन: स्थापित एवं परिपोषित 'वैदिक–धर्म' के मर्म को सरल भाषा में प्रस्तुत करने वाल दुर्लभ साहित्य दिल्ली प्रतिनिधि सभा के पुस्तक विक्रय विभाग में उपलब्ध है। जिसके अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, तथा वेद भाष्य आदि एवं भारत वर्ष के अन्य मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित एवं प्रकाशित साहित्य निम्न दर पर सुलभता से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा साहित्य कि 'एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना' की सार्थकता को सिद्ध करता है।

सभा के पुस्तक विक्रय विभाग में देश की सभी मुख्य भाषाओं में वैदिक साहित्य उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त सभी मुख्य विद्वानों के वेद भाष्य भी उपलब्ध है। हवन सामाग्री गुग्गल लोबान, ओ३म् ध्वज, वेदमन्त्रों पटके, प्रचार सामाग्री यज्ञ पात्र, यज्ञ कुण्ड तथा वैदिक साहित्य, की सन्ध्या–हवन भजन एवं वेद भाष्यों की सीडी एवं वीसीडी भी सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। 5000/रु० से अधिक साहित्य क्रय करने वाले के लिए सामान भेजने की व्यवस्था (दिल्ली प्रदेश में) भी विभाग की ओर से की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें– **वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,** 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, मो. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 5 का शेष

विपरीत परिस्थितियों में विचलित होने से कैसे बचें? अपने आत्म विश्वास को कैसे बढ़ाएँ? अपने कौशल (Skills) द्वारा बच्चों का I.Q. स्तर और S.Q स्तर कैसे बढ़ाया जाए? समझाया। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर अनेक उदाहरण इन कार्यशालाओं में अध्यात्मक वर्ग के सम्मुख प्रस्तुत किए। और सभी को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते रहने, समय का मूल्य समझने, कक्षा में प्रत्येक बच्चे के लिए समानता बनाए रखने बच्चों में किसी भी स्तर पर भेदभाव न करना अपने विद्यमान कौशल को निखारने, दूसरों की आलोचना न करने, बच्चों को उनके किए गए छोटे से छोटे कार्य के लिए प्रोत्साहित करना व गलतियों के लिए समझाना जैसे बिन्दुओं को बताया। इन कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षक वर्ग के व्यक्तित्व में विकास होगा। ऐसी हमारी आशा है।

– ***सरोज यादव, संयोजिका***

आर्यसमाज हनुमान रोड का वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली में वेदप्रचार समारोह के अवसर पर श्रावणी पर्व रक्षा बन्धन 10 अगस्त 2014 को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर विशेष यज्ञ अ० कर्ण देव शास्त्री जी हवन कराया गया। सभी याज्ञिकों को यज्ञों पवीति दिया गया विशेष प्रवचन श्री अशोक उकरानी जी का पर्व के विषय पर दिया गया।

दिनांक 12 अगस्त 2014 से 18 अगस्त 2014 तक ऋग्वदीय यज्ञ आचार्य इन्द्रदेव जी के ब्रह्मत्व में हुआ ऋत्विक् डा. कर्ण देव शास्त्री थे। 12 अगस्त 2014 से 18 अगस्त 2014 तक प्रात: कालीन सत्र में पंच यज्ञों के महत्व एवं ईश्वरीय व्यवस्था आदि पर प्रवचन हुए। सांय कालीन सत्र में श्री राजवीर शास्त्री जी के सुमधुर भजनों का सभी ने अभिनन्दन किया तदुपरान्त आचार्य इन्द्रदेव जी ने 12 अगस्त से 17 अगस्त 2014 तक ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव एवं ओ३म् तथा गायत्री मंत्र से सम्बन्धित विशद् विस्तृत व्यख्यान दिए। दिनांक– 18 अगस्त 2014 को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता हुयी जिसका विषय था – आर्य संस्कृति के संरक्षक योगिराज श्री कृष्ण – जिसकी अध्यक्षता आचार्य इन्द्रदेव जी ने की। दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों गुरुकुलों के छात्र– छात्राओं ने भाग लिया जिसमें कु. कीर्ति तंवर– रघुमल आर्य सी०सै० स्कूल राजाबाजार की छात्रा ने प्रथम स्थान एवं कु. सेवती सिंह दयानन्द माडल स्कूल मन्दिर मार्ग न.दि. ने द्वितीय स्थान तथा कु. मधुमाला– आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली तृतीय स्थान प्राप्त किया।

– ***दयानन्द यादव, मन्त्री***

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह